BEd C-6

NATIONAL COUNCIL OF WOMEN'S EDUCATION - 1959

राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद

1959

देशमुख समिति की सिफारिश को स्वीकार करके, केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने सन् 1959 में राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद का निर्माण किया सन् 1964 में इसका पुनर्गठन किया गया इस समय इसमें अध्यक्ष एवं सचिव के अतिरिक्त 27 सदस्य हैं। इसके मुख्य कार्य अधोलिखित हैं —

(1) विद्यालय स्तर पर बालकाओं की और स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं पर सरकार को परामर्श देना

(2) उक्त क्षेत्रों में बालिकाओं एवं स्त्रियों की शिक्षा के प्रसार एवं सुधार के लिए लक्ष्यों, नीतियों कार्यक्रम एवं प्राथमिकताओं के विषय में सुझाव देना।

Scanned by TapScanner

(3) उक्त क्षेत्रों में व्यक्तिगत प्रयासों का सर्वोत्तम प्रयोग करने के लिए उपायों का सुझाव देना

(4) बालिकाओं एवं स्त्रियों की शिक्षा के पक्ष में जनमत का निर्माण करने के लिए उचित उपायों का सुझाव देना

(5) उक्त शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली प्रगति का समय-2 पर ~~आवश्यकतानुसार~~ सर्वेक्षण मूल्यांकन करना और भावी कार्यक्रम की प्रगति पर दृष्टि रखना।

(6) उक्त शिक्षा से सम्बंधित समस्याओं पर विचार करने के लिए समय-समय पर आवश्यकतानुसार सर्वेक्षण अनुसंधान एवं विचार-गोष्ठियों का आयोजन किये जाने की सिफारिश करना।

Scanned by TapScanner

हंसा मेहता समिति 1962

(HANSA MEHTA COMMITTEE 1962)

राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद का एक मुख्य कार्य - विद्यालय - स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करना है। इन समस्याओं में सर्वप्रथम यह है कि विद्यालय - स्तर पर बालकों एवं बलिकाओं के पाठ्यक्रमों में अन्तर होना चाहिए परिषद ने इस समय पर विचार करने के लिए श्रीमती हंसा मेहता की अध्यक्षता में एक समिति की थी जिसे हंसा मेहता समिति कहा जाता है। इस समिति के सदस्यों ने पर्याप्त विचार विमर्श के पश्चात दो सुझाव प्रस्तुत किये

पहला सुझाव —

विद्यालय - स्तर पर

बालकों और बालिकाओं के पाठ्यक्रम में अन्तर नहीं होना चाहिए इस सम्बन्ध में अपने तर्क प्रस्तुत करते हुए समिति ने कहा —

Scanned by TapScanner

हम भारत मे जनतन्त्रीय एवं समाजवादी समाज की स्थापना करने की चेष्टा कर रहे है। ऐसे समाज मे शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्तिगत क्षमताओ रूझानो एवं रूचियो होना चाहिए जिनका लिंग से कोई विशेष सम्बन्ध नही है। अतः ऐसा समाज मे लिंग के आधार पर पाठ्यक्रमो मे अन्तर करने को कोई आवश्यकता नही है।

दूसरा सुझाव —

भारत मे अभी जनतन्त्रीय एवं समाजवादी समाज के निर्माण की प्रतिक्रिया चल रही है। अतः इस अन्तः कालीन अवधि मे पुरूषो एवं स्त्रियो के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कार्यो के भेदो के आधार पर बालको एवं बालिकाओ के लिए विभिन्न पाठ्क्रमो का निर्माण करना चाहिए।

Scanned by TapScanner